डॉ. राजीव गुप्ता

बूँद-बूँद जल अमृत है

बूँद-बूँद पानी अमृत है यही सृष्टि का गहना है
व्यर्थ नहीं जाने देना यदि हमें सृष्टि में रहना है।

बूँद-बूँद जल को लेकर नभ में बादल बनते हैं,
तन-मन हर्षित होता है जब ये खूब बरसते हैं।

बूँद-बूँद जल का रिसना कम न तुमको जान पड़े,
इसके नीचे रख दो तो भरते जाएंगे कई घड़े।

बूँद-बूँद जल को तरसोगे यदि तुम व्यर्थ बहाओगे,
अपनी इस ओछी हरकत पर एक दिन तुम पछताओगे।

बूँद-बूँद पानी की कीमत प्यासा ही कह सकता है,
क्या पानी के बिना कोई दो दिन भी रह सकता है।

बूँद-बूँद अधरों से लग जब सबकी प्यास बुझाती हैं,
मन तृप्त हमारा होता है मन को भी यह हर्षाती हैं।

बूँद-बूँद है सृष्टि, सहज जीवन, अभिनंदन है,
जल है तो ही सांसों की लय है, ये स्पंदन हैं।

बूँद-बूँद गिरती बारिश जब धरती से टकराती है,
मिट्टी से तब सौंधी-सौंधी मादक खुशबू सी आती है।

बूँद-बूँद इस पानी से ही ताल-तलैया भरती हैं,
खेत तृप्त हो जाते हैं, नदियाँ भी आगे बढ़ती हैं।

बूँद-बूँद हैं नस में, इन बूँदों से ही जीवन है,
इन बूँदों में साँसें हैं, मन है, सारा उपवन है।

बूँद-बूँद है जल संचय धरती के निविड़ अंधेरों में,
हम दोहन करते हैं जिसका, नित साँझ-सवेरे ढेरों में।

बूँद-बूँद सागर में है तो ही इसकी तरूणाई है,
इसने बहुत सहेजा है यही इसकी चतुराई है।

बूँद-बूँद पानी अमृत अब निश्चित ही तुम जान गए,
व्यर्थ नहीं बहने दोगे जो मोल सही पहचान गए।

सम्पर्क करें:
डॉ. राजीव गुप्ता
5/11, बाग कूँचा, फर्रुखाबाद
उत्तर प्रदेश-209 625
मो.नं. 6388563424
ई मेल: rajeevgupta.5j@gmail.com